मूर्तिकला → भारत में मूर्तिकला को अत्यन्त प्रतिष्ठित माना जाता है। प्राचीन भारतीय मंदिरों की मूर्तिकला पर सम्पूर्ण विश्व आश्चर्य करता है और मुग्ध होता है। मंदिरों में मूर्तिकला का अत्यन्त उदात्त रूप दिखने को मिलता है।

उदाहरणार्थ → दक्षिण भारत में नटराज की मूर्ति पर-माला के विराट स्वरूप को परिलक्षित करता है। प्राचीन मूर्ति निर्माण में धार्मिक भावना और आत्मा व आस्था का बाहुल्य रहता था। भारतीय मूर्तिकला के तीन प्रमुख प्रयोजन हैं – धार्मिक, स्मारक और अलंकरण। आधुनिक भारतीय मूर्तिकारों में देवी-प्रसाद, रामचौधरी, रांखो चौधरी, धनराज भगत और रामकिशन को अग्रणी माना जाता है।

रूप में आकर मनुष्य को सत्यम, शिवम् और सुन्दरम् का दर्शन कराती है।

कलाओ का वर्गीकरण

कलाओ को मोटे रूप में निम्न चित्र के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है।

- कलाएँ
  - दृश्य कलाएँ
    - चित्रकला
    - मूर्तिकला
    - वास्तुकला
  - प्रदर्शनकारी कलाएँ
    - काव्यकला
    - संगीत कला

Scanned with CamScanner

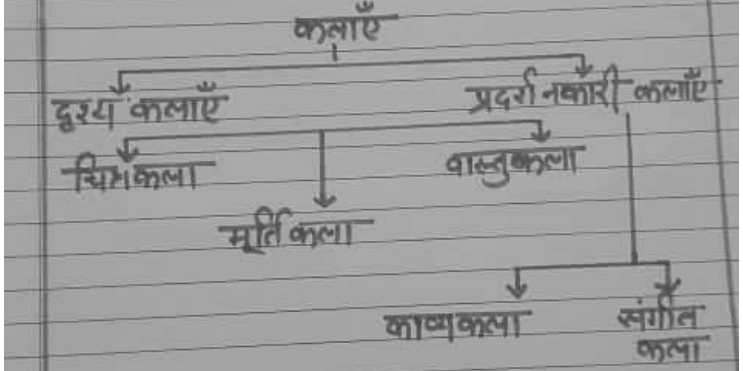

Page 5.

चित्रकला →

समस्त शिल्पों और कलाओं मे प्रधान तथा सर्वप्रिय चित्रकला को माना गया है। यह माना जाता है कि चित्रकला भौतिक, दैविक एवं आध्यात्मिक भावना तथा सत्यम, शिवम और सुन्दरम् की समन्वित रूप की अभिव्यक्ति है। रेखा, वर्ण, वर्तना और अलंकरण इन चारों की सहायता से चित्र का स्वरूप निष्पादित होता है।

सामान्य रूप मे प्राचीन काल मे तीन प्रकार के चित्र बनते थे - भित्ति चित्र, पट चित्र और फलक चित्र। आधुनिक चित्रकला मे चेतन कला का स्थान प्रमुख है। आधुनिक चित्रकार कल्पना मे पूर्ण विश्वास रखता है।

भारत मे अमृता शेरगिल, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अवनीन्द्रनाथ टैगोर, रजा, सूजा, एम॰ एफ॰ हुसैन आदि सुविख्यात चित्रकार है।

काव्यकला → काव्य में सम्प्रेषण भाव और विचार के साथ कुछ और भी होता है। यही 'कुछ और' काव्य की आत्मा या पहचान है। इस 'कुछ और' को विचारकों ने स्पष्ट करते हुए इसे 'चारुता' या 'सौन्दर्य' कहा। 'चारुता' या 'सौन्दर्य' पर विचार करते हुए यह कहा जाता है कि जो चेतना को अपनी ओर खींचे वह सुन्दर है - उसमें सौन्दर्य है।

विभिन्न युगों में तथा विभिन्न वर्गों के कवियों में काव्य प्रेरणा के मूलाधार विभिन्न -2 होते हैं जैसे - ब्राह्य प्रकृति और जगत के किसी दृश्य, घटना, परिस्थिति या अवस्था का प्रभाव, किसी अन्य व्यक्ति, आश्रयदाता, गुरु, आचार्य या मित्र की प्रेरणा, किसी विचार या जीवन दर्शन का अलौकिक प्रभाव, विरह या पीड़ा की अनुभूति।

कविता प्रत्यक्ष की जाती है और प्रत्यक्ष ज्ञान व्यक्तिगत अनुभूति है।

Page 5.

वास्तुकला → भारतीय वास्तुकला के विकास का स्रोत धर्म ही रहा है, मूर्तिकला और चित्रकला को वास्तुकला के अन्तर्गत ही स्थान दिया गया था। प्राचीन गुफाओं, मन्दिरों आदि में तीनों कलाएँ एक साथ मिलती हैं। वास्तुकला का सीधा अर्थ है उन भवनों का निर्माण करना, जहाँ निवास किया जाता है।

उदाहरणार्थ → सुनियोजित नगर-निवेश, पक्की ईंटों के बने सार्वजनिक एवं निजी सड़कें, जल-निकास की नालियाँ, सिन्धु सभ्यता आदि।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र से नगर वास्तुकला के विषय में उल्लेखनीय जानकारी मिलती है।

प्रमुख शास्त्रकारों ने वास्तु की तीन आकार शैलियों का उल्लेख किया है, नागर (ब्रह्मा से सम्बन्धित) द्रविड़ (विष्णु से सम्बन्धित) और बेसर (महेश से सम्बन्धित), अन्य कलाओं के समान ही वास्तुकला का भी प्रत्यक्ष सम्बन्ध सौन्दर्य से है।

Scanned with CamScanner

चित्र शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव में निहित चित्र शक्ति, जो शब्दों (ध्वनि) के माध्यम से संगीत का रूप ले लेती है।

भारतीय संस्कृति और मूल्यों में कला की भूमिका →

किसी राष्ट्र के विकास में वहाँ की संस्कृति और मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी राष्ट्र की संस्कृति वहाँ की प्रवृत्तियों, मूल्यों, आचार-विचार, विश्वासों का प्रतिनिधित्व करती है। भारत में 'अनेकता में एकता' मात्र शब्द नहीं है। यह भारतीय संस्कृति मूल्यों का सशक्त स्तम्भ है। भारत में अपनी संस्कृति के लिए सुविख्यात रहा है, जिसका आधार ही कला है। यहाँ के धार्मिक अनुष्ठान,

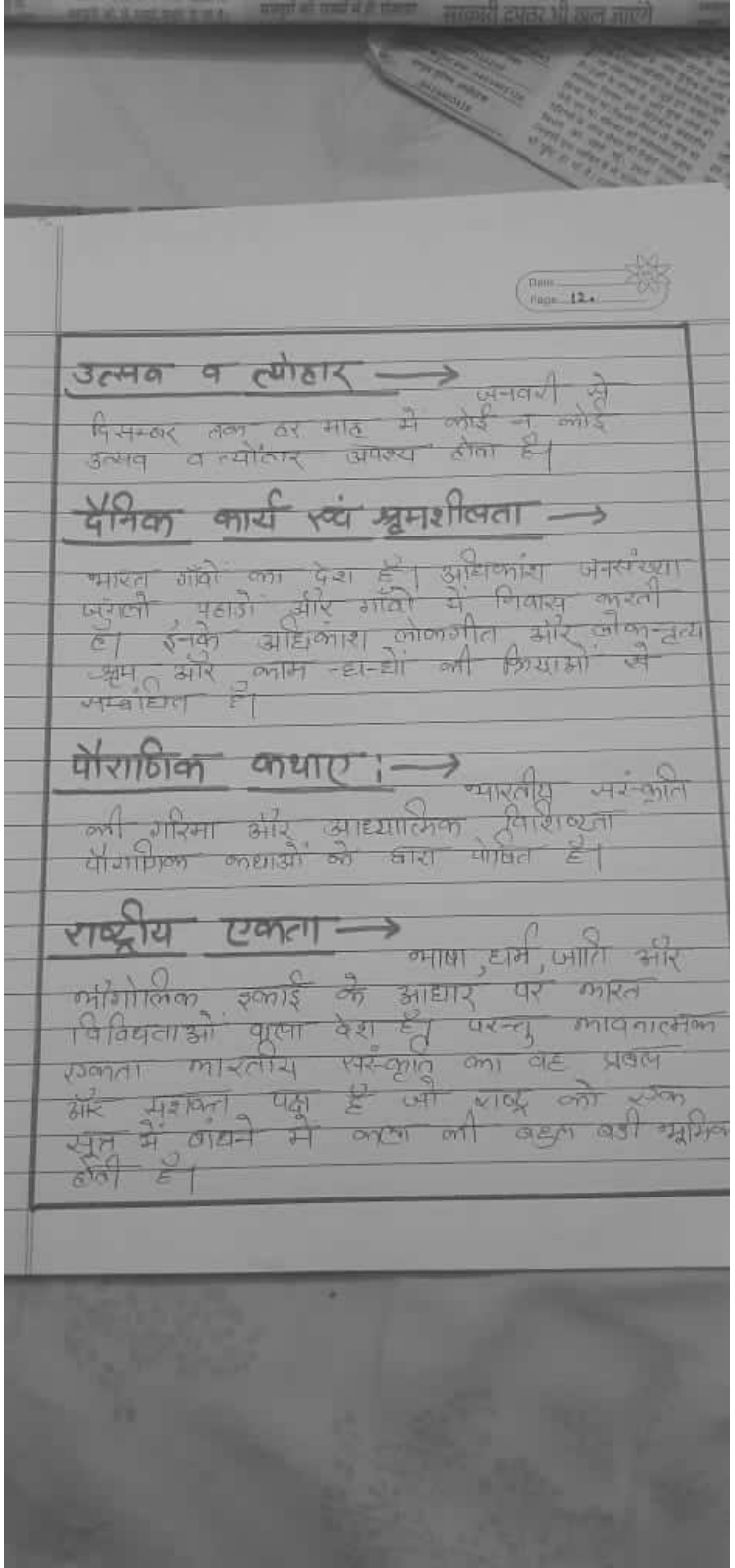

उत्सव व त्योहार → जनवरी से दिसम्बर तक हर माह में कोई न कोई उत्सव व त्योहार अवश्य होता है।

दैनिक कार्य एवं श्रमशीलता →

भारत गाँवो का देश है। अधिकांश जनसंख्या जंगलो, पहाड़ो और गाँवो में निवास करती है। इनके अधिकांश लोकगीत और लोकनृत्य श्रम और काम-धन्धों की क्रियाओं से सम्बंधित है।

पौराणिक कथाएं : → भारतीय संस्कृति की गरिमा और आध्यात्मिक विशिष्टता पौराणिक कथाओं के द्वारा पोषित है।

राष्ट्रीय एकता → भाषा, धर्म, जाति और भौगोलिक इकाई के आधार पर भारत विविधताओं वाला देश है परन्तु भावनात्मक एकता भारतीय संस्कृति का वह प्रबल और सशक्त पक्ष है जो राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में कला की बहुत बड़ी भूमिका होती है।

Scanned with CamScanner

स्वागत करना →

फूलों का हार पहनाकर स्वागत करना भारतीयों की अनोखी परम्परा है।

विवाह →

भारत में विवाह एक संस्था है। विवाह में दो लोग नहीं, अपितु दो परिवार जुड़ते हैं। नृत्य और संगीत से परिपूर्ण वातावरण में वैवाहिक अनुष्ठान प्रतिपादित किए जाते हैं।

भारतीय परिधान →

भारतीय साड़ियाँ विश्वविख्यात हैं। देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की विशिष्ट पहचान वहाँ की परिधान है।

भारतीय आभूषण →

आभूषणों की अनुपम डिजाइन कलात्मक सौन्दर्य और सृजनात्मक भारतीय संस्कृति और परम्परा को प्रस्तुत करते हैं।

Scanned with CamScanner

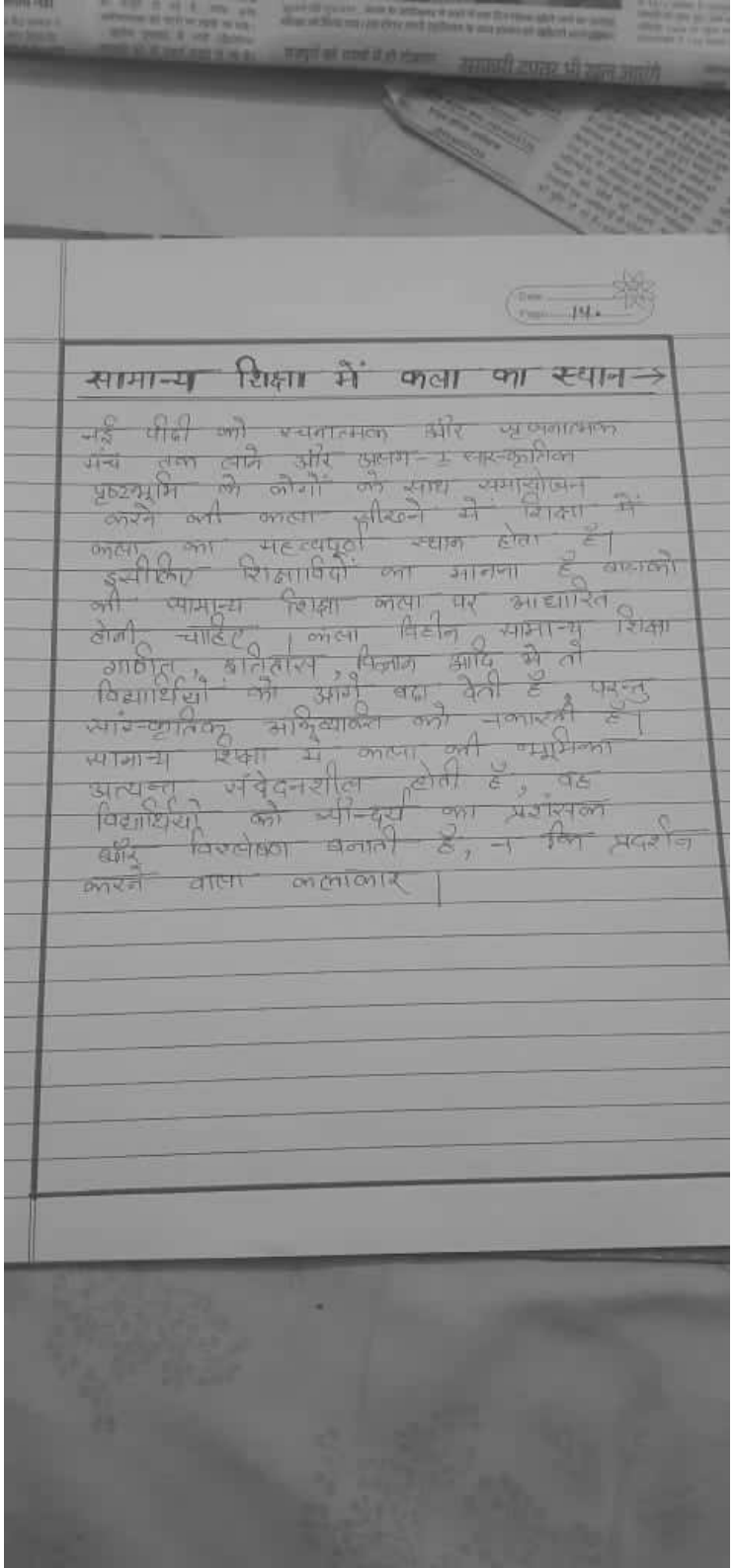

सामान्य शिक्षा में कला का स्थान →

नई पीढ़ी को रचनात्मक और सृजनात्मक मंच तक लाने और अलग-2 सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ समायोजन करने की कला सीखने में शिक्षा में कला का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसीलिए शिक्षाविदों का मानना है बच्चों की सामान्य शिक्षा कला पर आधारित होनी चाहिए। कला विहीन सामान्य शिक्षा गणित, इतिहास, विज्ञान आदि में तो विद्यार्थियों को आगे बढ़ा देती है, परन्तु सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को नकारती है। सामान्य शिक्षा में कला की भूमिका अत्यन्त संवेदनशील होती है, वह विद्यार्थियों को सौन्दर्य का प्रशंसक और विश्लेषक बनाती है, न कि प्रदर्शन करने वाला कलाकार।

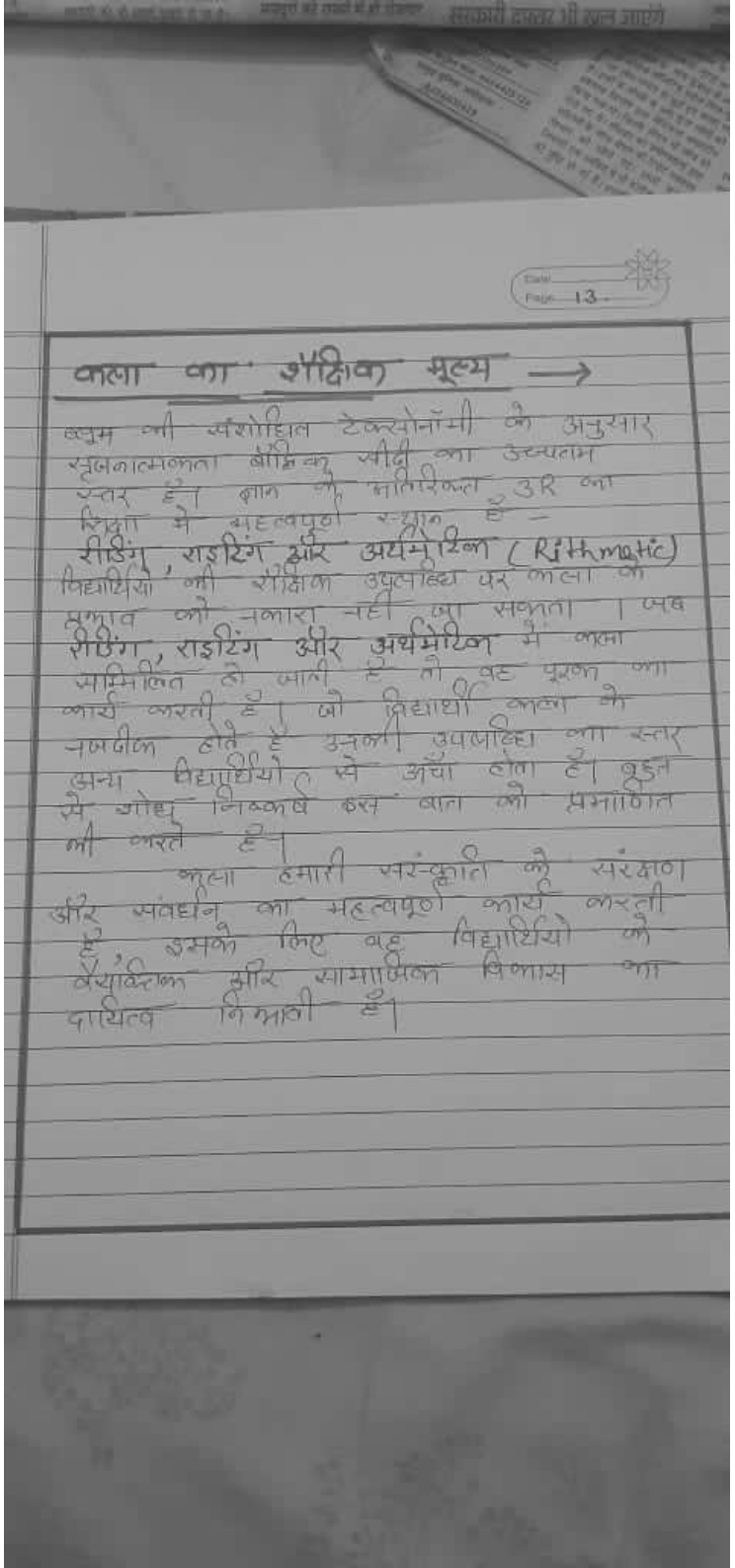

कला का शैक्षिक मूल्य →

ब्लूम की संशोधित टेक्सोनॉमी के अनुसार सृजनात्मकता बौद्धिक सीढ़ी का उच्चतम स्तर है। ज्ञान के अतिरिक्त 3R का शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है –

रीडिंग, राइटिंग और अर्थमेटिक (Rithmetic) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कला के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। जब रीडिंग, राइटिंग और अर्थमेटिक में कला सम्मिलित हो जाती है तो वह पूरक का कार्य करती है। जो विद्यार्थी कला के नजदीक होते हैं उनकी उपलब्धि का स्तर अन्य विद्यार्थियों से ऊँचा होता है। बहुत से शोध निष्कर्ष इस बात को प्रमाणित भी करते हैं।

कला हमारी संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन का महत्वपूर्ण कार्य करती है, इसके लिए वह विद्यार्थियों के वैयक्तिक और सामाजिक विकास का दायित्व निभाती है।

रेखा के प्रकार

मुख्यत: रेखा के चार प्रकार होते हैं।

1. लम्बवत् रेखा
2. समतल रेखा
3. तिरछी रेखा
4. वक्र रेखा

लम्बवत् रेखा → ये रेखाएँ सदैव खड़ी होती है। इसलिए सदैव लम्बाई बढ़ाने का अभ्यास होता है।

समतल रेखा → ये रेखाएँ चौड़ाई बढ़ाने का अभ्यास देती है। गृह सज्जा में इनका प्रयोग होता है।

तिरछी रेखा → इन रेखाओं में ढ़लान होता है अत: लम्बवत् तथा समतल की अपेक्षा इनमें गति अधिक होती है।

वक्र रेखा → इनमें गोल रेखाओं को हम प्रकृति में पाते हैं। सजावट में विशेषता लाने के लिए इसका प्रयोग होता है।

Scanned with CamScanner

Date
Page 17.

आकार

जब कला के पहले तत्व रेखा को आपस में जोड़ा जाता है।
जैसे:→ आयताकार, चौकोर, त्रिभुज, पंचभुज आदि।

आयताकार →

जब कला में आयताकार बनाते हैं तो चार रेखाओं को जोड़कर बनाया जाता है। आमने-सामने की रेखाएँ एक समान आकार में होती हैं।

चौकोर →

चौकोर की चारो भुजाएँ एक समान होती है।

त्रिभुज →

इसका आकार समतल एवं तिरछी व खड़ी रेखाओं से बनता है। एक रेखा समतल व दो रेखाएँ तिरछी होती है। जो खड़ी होती है व तिरछी भी हो सकती है।

पंचभुज →

समतल एवं तिरछी रेखाओं को जोड़कर यह आकृति बनती है।

Scanned with CamScanner

कला

कला वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करता है। यह कला गायन, लेखन, नृत्य, सज्जा कुछ भी हो सकती है। कला सौन्दर्य को जन्म देती है। कला के लिए इन तत्वों का होना जरूरी है।

1. रेखा
2. रंग
3. आकार
4. नमूना
5. पोत
6. प्रकाश
7. स्थान

रेखा → बिना रेखा के किसी भी कला का प्रारम्भ नहीं हो सकता। रेखा एक्का गति बहाव का प्रतीक होता है। दो बिन्दुओं के बीच जो बहाव है, उसी का नाम रेखा है कला का बहाव ही रेखा होती है।

Scanned with CamScanner

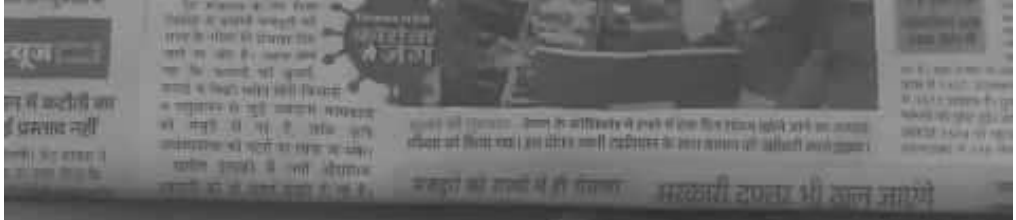

Page 18.

वक्र → दो वक्र रेखाएँ जोड़कर गोला या चक्र तैयार करते हैं।

पोत → किसी वस्तु को छुने से उसकी सतह के लिये जो आभास होता है वही पोत कहलाता है।

रंग → रंग कला का ऐसा तत्व है जिसके बिना सज्जा नीरस एवं सौन्दर्यहीन जीवनहीन हो जाती है। रंग जीवन और सौन्दर्य के प्रतीक हैं।

नमूना → कोई भी नमूना कला के वर्णित ऊपरी चारों तत्वों को मिलाकर बनता है रेखा, आकार, पोत, रंग का मिश्रण ही नमूना है।

कला के सिद्धान्त

कला मानव जीवन की सहज अभिव्यक्ति है। यह एक साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है। कला, साहित्य, नृत्य, गान, चित्रकला आदि किसी भी रूप में मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। कला के पाँच सिद्धान्त होते हैं।

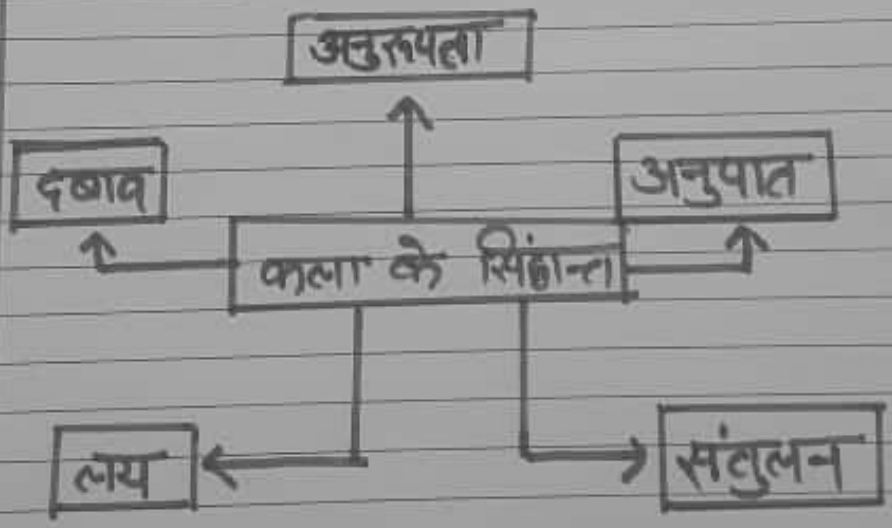

Date
Page 20.

डिजाईन

डिजाईन अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसका हिन्दी रूपान्तरण नमूना है। यदि हम इस शब्द के अर्थ की गहराई में जाए तो वह है जो व्यक्ति को विभिन्न वस्तुओं के चुनाव तथा व्यवस्थापन को एक क्रमबद्ध तथा सौन्दर्यपूर्ण ढंग से करना सीखाता है। गृह सज्जा की कला में भी डिजाईन का विशेष महत्व है।

मुख्यतः डिजाईन दो प्रकार के होते हैं-

1. रचनात्मक डिजाईन
2. सौन्दर्यात्मक डिजाईन

एक डिजाईन को बनाने के लिए जिन आधार वस्तुओं की आवश्यकता होती है वे निम्न है-

1. रेखाएँ 2. आकार 3. रंग 4. बनावट
5. विचार

रंगों की व्याख्या

रंगो का प्रभाव सार्वभौमिक होता है। सौन्दर्य वृद्धि मे रंगो की योग्यतापूर्ण प्रयोग आनन्द प्रदान करने वाले होते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है। जिन्हे रंगो का कोई भी ज्ञान नही होता किन्तु वास्तविक मे अनुभूति देने के कारण बिना रंगो के भी वे इसका प्रयोग सरलता तथा सुव्यवस्थित ढंग से कर सकते हैं। हमें रंगो की भाषा को जानना आवश्यक है। मनुष्य उचित रंग योजना का प्रयोग कर अपने जीवन मे सरलता तथा प्रसन्नता प्राप्त करता है। एवं आकर्षण उत्पन्न करता है।

1. परांग रंग योजना
2. मनसैल का सिद्धान्त

परांग रंग योजना

परांग ने इस योजना का प्रतिपादन किया और उसी के नाम पर इस रंग योजना पड़ा। परांग ने रंगों की तीन विशेषताए बताई जिन्हें बीमा कहते है ये तीनों विमा आपस मे एक दूसरे से उसी प्रका अलग होती हैं। जिस प्रकार पदार्थ के तीन परिमा

Scanned with CamScanner

बनाने इन सभी रेखाओं का प्रयोग होता है।

2. **आकार :-** नमूने कई प्रकार के होते हैं। छोटा, बड़ा इत्यादिक बड़ा, आकर्षक व आकर्षित आकार के अन्तर्गत किसी भी चीज या वस्तु का नाम या आकार आते हैं। किसी भी वस्तु का आकार गोल, चौकोर, आयताकार कुछ भी हो सकता है।

3. **रंग :-** एक डिजाईन में रंग का प्रयोग डिजाईन के आधार पर ही किया जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि तीन या चार से अधिक रंगों का प्रयोग नमूने का नुकसान कर देता है।

4. **बनावट :** नमूने या नमूने की बनावट किस प्रकार की है। यह बनाने वाले की योग्यता तथा रूचि पर निर्भर करता है। डिजाईन का सौन्दर्य उसकी बनावट पर निर्भर करता है।

Scanned with CamScanner

पीला + हरा = लाल + बैंगनी
नीला + हरा = लाल + नारंगी
नीला + बैंगनी = पीला + नारंगी

तृतीयक श्रेणी के रंग →

जब दो द्वितीयक रंगों को मिलाया जाता है तो तटस्थ व उदास रंग दिखाई पड़ते हैं वे तीन रंग होते हैं

हरा + नारंगी = तीसरी श्रेणी का पहला रंग
हरा + बैंगनी = तीसरी श्रेणी का नीला रंग यह नीला एवं स्लेटी दिखाई पड़ता है।
बैंगनी + नारंगी = तीसरी श्रेणी का लाल रंग यह लाल रंग जैसा दिखाई पड़ता है।

चतुर्थ श्रेणी के रंग →

दो तृतीयक श्रेणी के रंगों को मिलाने से चतुर्थ श्रेणी के रंग प्राप्त होते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं। व तृतीयक श्रेणी के रंगों की अपेक्षा अधिक तटस्थ व अस्पष्ट तथा उदासी भरे होते हैं।

1. तृतीयक श्रेणी का पहला पीला + नीला रंग = चौथी श्रेणी का हरा रंग

Scanned with CamScanner

लं० चौं० ऊँचाई के अनुसार आपस में भिन्न होती है पराग के अनुसार भिन्न विमा तीन प्रकार के होते है।

प्राथमिक श्रेणी के रंग :→ प्राथमिक रंगो मे पराग ने तीन रंग लिए है लाल, पीला एवं नीला। इन तीनो को विभिन्न अनुपात मे मिलाने पर अन्य सभी रंग प्राप्त किए जा सकते है। ये तीनो रंग ऐसे है, जिन्हे अन्य किसी रंग द्वारा प्राप्त नही किया जा सकता। प्राथमिक रंगो को जब बराबर अनुपात मे मिलाते है तो द्वितीयक रंग प्राप्त होते है।

द्वितीयक श्रेणी के रंग :→ बैंगनी रंग नीला और लाल रंग के बराबर अनुपात मे मिलाने से बना है अत: यह द्वितीयक रंग है। नारंगी रंग लाल और पीला बराबर अनुपात मे मिलाने पर बनता है। हरा रंग नीला और पीला रंग को मिलाने पर बनता है।

माध्यमिक श्रेणी के रंग जब एक प्राथमिक तथा उसके पड़ोसी द्वितीयक रंग को मिलाया जाता है तो इण्टरमीडिएट ह्यू (HUE) प्राप्त होता है ये छ: प्रकार के होते है —

Scanned with CamScanner

2. तृतीयक कोणी का नीला रंग + लाल रंग = चौथी कोणी का बैंगनी रंग

3. तृतीयक कोणी का लाल रंग + पीला रंग = चौथी कोणी का नारंगी रंग

Scanned with CamScanner